Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

स्त्री यात्रा-साहित्य में अंतरात्मा का शिल्पगत विश्लेषण

Kusum Lata[1]*, Dr. Soniya Yadav[2]

[1] Research Scholar, Sunrise University

[2] Assistant Professor, Sunrise University

सार - *यह स्त्री यात्रा-साहित्य में अंतरात्मा का शिल्पगत विश्लेषण पर चर्चा की गई है "यात्राएँ हमें बाहर के स्पेस में ही नहीं ले जाती, उन अज्ञात स्थलों की ओर भी ले जाती हैं , जो हमारे भीतर है।ष् अतः खुद को समझने के लिए यात्राएँ सहायक हैं। लेखिका के लिए प्रत्येक यात्रा स्थान महज कोई देश या शहर नहीं थी। प्रत्येक देश की प्रकृति ही नहीं , उनका स्पंदन, उनकी आत्मा, उनका प्रेम, उनका सुख-दुःख सबकुछ यात्री कुसुम खेमानी में अन्तर्भूत होकर एकात्म होता देखा जा सकता है। अतः यात्रा मात्र एक शारीरिक प्रवृत्ति नहीं है। मन-मस्तिष्क का भी उसमें भागीदारी है। अतः यात्रा व्यक्ति में निखार लाती है, ।*

मुख्यशब्द - *स्त्री , यात्रा-साहित्य , शिल्पगत.*

----------X----------

प्रस्तावना

किसी भी मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है यात्रा करना। यात्रा पर स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार है। यात्रा एक शारीरिक प्रवृत्ति ही नहीं, एक मानसिक वृत्ति भी है। यात्रा आज़ादी का द्योतक है। मनोरंजन के लिए यात्रा करने की संस्कृति पुरुषों से विकसित हुई , जिससे स्त्रियाँ वंचित थीं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री को स्थावर वस्तु मानकर उसके लिए अनुयोज्य स्थान घर ठहरा दिया। तीर्थायात्राओं में स्त्रियों को साथ लिया जाता था और कभी-कभी अकेले जाने की अनुमति भी दी जाता था । उन्नीसवीं-बीसवीं सदी तक स्त्री यात्रा पर लगी पाबन्दियों पर लचीलापन आया और आज स्त्री की यात्राएँ पुरुषों को काँटे की तरह नहीं चुभती हैं। अंग्रेज़ी विदुषी विरजीनिया वुल्फ़ ने लिखा है कि एक स्त्री होने के नाते मुझे मुल्के नहीं है।

एक स्त्री होने के नाते मुझे मुल्कों की आवश्यकता भी नहीं हैं। एक स्त्री के रूप में मेरा देश पूरी दुनिया है।श् देश हिन्दुस्तान हो या अफगानिस्तान , पाकिस्तान या ईराक , अमेरिका या ब्रिटेन , स्त्री यात्रियाँ अपने कदमों से नापकर आगे बढ रही हैं और अपनी अन्तर्यात्रा को प्रस्तुत करती जा रही हैं। स्त्री की यात्राएँ साँस्कृतिक यात्रा ही नहीं , एक तरह से अन्तर्यात्रा ही है। यात्रा के प्रति दबी स्त्री इच्छाएँ एवं यात्रा से प्राप्त आनन्द तथा यात्रियों के मनोव्यापारों एवं जीवन के विविध सरोकरों से ओतप्रोत है हिन्दी का स्त्री यात्रा-साहित्य।

यात्रा में अन्तर्यात्रा

हिन्दी की वरिष्ठ लेखिका गगन गिल की यात्रा नहीं सचमुच अन्तर्यात्रा है 'अवाक्श्। कैलाशी गगन गिल जून 2007 को हिमालय से लौटी तो लेखिका को लगी कि वे हिमालय के अलावा कहीं की न रहीं। इस भावना से तृप्त होने हेतु चार सप्ताह में अपनी कैलाश-मानसरोवर यात्रा की यादों को चिरस्मरणीय बनाने हेतु अवाक्श् की रचना की। ऊपरी तौर पर यह एक तीर्थयात्रा ही है। "तीर्थयात्रा केवल बाहर की दुनिया से आरंभ नहीं होती , उसकी वास्तविक लय हमेशा भीतर से शुरू होती है। एक अदृश्य भीतर बिन्दु से।ष्

www.ignited.in

हर यात्री यात्रा के समय आवश्यक चीजें , साथ ले जाता हैं। ऐसी एक यात्रा है, जिसमें हम कुछ नहीं ले जाता है , वह है मृत्यु यात्रा। यात्रा की एक दौर में गगन गिल अपने डैफल बैग को देखती हैं। उन्होंने देखा कि , तारा देवी के वहाँ छोडने के लिए लाये सामान बैग में सुरक्षित हैं और उन सामानों को छोड़ देना भी चाहिए। लेकिन लेखिका को यह सचमुच मुश्किल लगता है , उसे मन से छोड़ देना। लेखिका कहती है कि , "सबसे भारी तो वह है , जो भीतर है , जिसे निकालकर अलग नहीं रखा जा सकता , जिसे गले में बाँधे-बाँधे यहाँ तक आ गई हूँ। छोड़ पाऊँगी उसे ? लेखिका अपना मन हल्का करने की कोशिश में कैलाश पहुँचथीं , लेकिन उनका मन ऐसी चिंताओं से भारी पड़ने लगता है।

श्अवाकश् गगन गिल की भौतिक यात्रा का जोखा नहीं है , वह उनकी आत्म यात्रा ही है। गगन गिल के अन्तर्मन से परिचित होने के लिए यह एक यात्रावृत्त काफी है। परिक्रमा पूरा हो जाने के बाद जाप करने के बजाय लेखिका के मुंह से लगातार यही निकलती रही कि श्मैं यहाँ मरने आ गयी हूँ।श् लेखिका को असीम पीडा हुई कि सारी परिक्रमा में भोलेनाथ का नाम रगडती रही , उसके बाद तो पता नहीं मरने का बात ही निकल रहा है तो , लेखिका को लगी कि, शंकर ने उनकी यात्रा अस्वीकार किया हो। बाद में लेखिका इस प्रकार सोचती है कि , "ईश्वर की गोद में हम उस पार पहुँच जाते हैं और पता भी नहीं चलता।ष्

अतः गगन गिल का प्रस्तुत यात्रावृत्त श्अवाकश् एक ऐसी अन्तर्यात्रा है , जो पाठकों के आन्तरिक भूगोल को भी तब्दील कर देता है।

आत्मा की तलाश

श्बादलों में बारूदश् मधु कांकरिया का झारखंड , लद्दाख, सिक्किम, तमिलनाडू, कालड़ी आदि प्रदेशों की यात्राओं का वर्णन है, जिसका प्रकाशन सन् 2014 में हुआ। श्जंगलों की ओरश् नामक यात्रा-विवरण में ज़िन्दगी के कुछ अंशों को इस प्रकार जोड़ा है कि , उनकी यात्राओं के पीछे का मकसद खुलकर आता है। लेखिका सोचती हैं कि वे रह-रहकर इन जंगलों में क्यों आती हैं ? इसका उत्तर भी वे देती हैं कि "यहाँ मैं अपने को खोजने आती हूँ। क्या है मेरे होने की अर्थवत्ता?ष् अतरू आत्मखोज की ख्वाहिश लेकर लेखिका ने ये यात्राएँ की हैं और उन्होंने समझ लिया कि , "यदि मैं इन दुर्गम पहाड़ियों को पार नहीं करते तो क्या ये आहलाद से भरे, आनन्द से इठलाते, पूर्णत्व भरे क्षण आते मेरी ज़िन्दगी में।ष् यहाँ लेखिका यात्रा से प्राप्त उनकी अलौकिक खुशी बाँटती है, क्योंकि अनेक ऐसी स्त्रियाँ हैं , जो घर के अन्दर ही अन्दर या घर-दफ्तर के चक्कर में पूरी ज़िन्दगी दौड़ती रहती हैं। उन लोगों के लिए ऐसी खुशी का मौका ही नहीं है।

यह बात सच है कि पुरुषों की तरह स्त्री के लिए कोई निजी ज़िन्दगी नहीं होती , जहाँ वे अपनी मनोवृत्तियाँ और इच्छाओं के साथ रह सकें , समय और संबन्ध को भूलकर मनोविहार कर सकें। यात्रा से प्राप्त एक और अनुभव को मधु कांकरिया पाठकों से साझा करते हैं कि , "यात्राएँ हमें बाहर के स्पेस में ही नहीं ले जाती, उन अज्ञात स्थलों की ओर भी ले जाती हैं , जो हमारे भीतर है।ष् अतः खुद को समझने के लिए यात्राएँ सहायक हैं।

हरिद्वार, कश्मीर, उज्जयिनी, कोलकत्ता, शिलांग, हैदराबाद से लेकर उर्बन , रोम, स्विटज़रलैण्ड, प्राग, मॉस्को, मिस्र, मॉरिशस, भूटान और अलास्का जैसे विभिन्न देशों को अपने कदमों से नापकर आये कुसुम खेमानी ने इन यात्राओं से प्राप्त आनन्द को श्कहानियाँ सुनाती यात्राएँश् नामक पुस्तक में पिरोया है। प्रस्तुत पुस्तक की भूमिका में लेखिका ने यात्रा और उनके बीच के संबन्ध पर थोडा प्रकाश डाला है। "यात्राओं ने मेरे जीवन की बुनावट के रचाव-बसाव में एक सार्थक भूमिका निबाही है और मुझे अत्यधिक आनन्द दिया है।ष् लेखिका के लिए प्रत्येक यात्रा स्थान महज कोई देश या शहर नहीं थी। प्रत्येक देश की प्रकृति ही नहीं , उनका स्पंदन , उनकी आत्मा, उनका प्रेम, उनका सुख-दुःख सबकुछ यात्री कुसुम खेमानी में अन्तर्भूत होकर एकात्म होता देखा जा सकता है। अतः यात्रा मात्र एक शारीरिक प्रवृत्ति नहीं है। मन-मस्तिष्क का भी उसमें भागीदारी है। अतः यात्रा व्यक्ति में निखार लाती है, एक अलग मानव बनाता है।

उद्देश्य

1. स्त्री यात्रा-साहित्य में अंतरात्मा का अध्ययन करना ।

www.ignited.in

2. स्त्री यात्रा-साहित्य में शिल्पगत विश्लेषण का अध्ययन करना ।

दूसरे देशों की स्त्री की आत्मा की तलाश

नासिरा शर्मा का यात्रावृत्त श्जहाँ फव्वारे लहु रोते हैश् में विभिन्न सियासी व्यवस्था के तहत अफगानी स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का चित्रण उपलब्ध हैं। अफगान के हज़ारों ऐसी स्त्रियाँ, जो ना रो पाती थी और ना ही अपनी व्यथा बयान कर पाती थी , ऐसी स्त्रियों के लिए सन् 1976 में श्रावाश् नामक महिला संस्था शुरू की जिसका मकसद था औरतों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना और वे सारे अधिकार दिलाना। औरतों पर पाबंदी थी कि बीमार होने पर डाक्टर को दिखाने या अन्य कोई भी ज़रूरत के लिए घर से बाहर न निकलें। पचास लोगों को रखने की क्षमता रखनेवाला 'पुल-एटचर्खश् नामक जेल में दो हज़ार से ज्यादा औरतों की भर्ती की गयी थी , जिनका जुर्म मामुली से मामुली था। ये औरतें जो हैं , भूख, बीमारी, निराशा, तनाव की बीमारी आदि से पीडित रहती थीं। मर्द की मर्जी से जीना ही अफगान सभ्य समाज की परंपरा है। लेखिका के निरीक्षण से यह बात मालूम पड़ी कि तालिबान और अहम्मद शाह मसूद के समय स्त्रियों को सबसे ज्यादा अत्याचार सहना पड़ा।

लेखिका ने देखा कि अपने ही देश के एक हिस्से से भागी औरतें देश की दूसरे कोने में पहुँचकर कितनी बेबस और आहत हो उठती हैं। नासिरा शर्मा लिखती हैं कि , "अफगानिस्तान एक बदनसीब मुल्क है और उससे ज्यादा बदनसीब वहाँ की औरतें हैं जो किसी भी सरकार में चैन से नहीं रह पाई और न कोई व्यवस्था उनके विकास और उत्थान केलिए कुछ कर सकी। इसके बावजूद वह जीने केलिए हर कठिन जगर से गुज़रने केलिए बाध्य है।ष् ईरान की लेखिकाओं की स्थिति भी शोचनीय है। लेखिका ने देखा कि जगह-जगह पर लिखा है "स्त्री का गौरव मातृत्व है।ष् यही स्त्रियाँ जब सरकार की शत्रुओं से लड़ती है तो उनका सराहना किया जाता है और यदि सरकार के विरुद्ध मुजाहिद्दीन बनकर लडती है तो उनका नाम तिरस्कार से लिया जाता है।

शिपरमिड के इस पार मिस्त्रश् में लेखिका कुसुम अंसल मिस्त्र के मस्जिदों की राह खोजते-खोजते गलियों से चलती नज़र आती हैं। लेखिका वहाँ की जीवन पद्धति जानना चाहती थीं, खासकरके पर्दो के पीछे की स्त्री जीवन को। आखिर एक स्त्री उसके आगे प्रत्यक्ष होती है , नवयौवना, सुन्दर, लंबा सा रंग का चोला पहना जिसने सिर पर कसकर कपडा बांधा है। लेखिका ने उसके चेहरे पर विशेष रूप से गहरी भूरी उनकी आँखों में लबालब भरी हुई एक तरल संवेदना देखी जो उनसे कुछ कहने केलिए आतुर लगती थी। उस औरत को देखकर लेखिका को लगी कि कुछ है जो उन्हें छू रहा है, कुरेद रहा है। लेखिका उस औरत से यह जानना चाहती थीं कि, "इस धरती की इस गली की इस औरत का, इक्कीसवीं सदी की पर्दानशी इस औरत का जीवन और इस टूटते-ढ़हते घर के अस्तित्व का आज के युग में अर्थ क्या है?श्श् उस औरत मानो एक तसल्ली ढूँढ रही थी अपनी मनोव्यथा कहने। उस औरत ने अपनी तुर्शी आवाज़ में अपने जैसी अनेक मिस्त्र औरतों की व्यथा-जीवन कथा लेखिका के आगे बहने दिया। उस औरत के मुँह से निकली अनवरत शब्द या उसका जवाब मानो एक सवाल के लिए सब्र करती महसूस होती है। एक सवाल उन औरतों की होने की अर्थवत्ता का , एक सवाल उस औरत के मन की अनेक गुत्थियों को सामने लाया। "संसार के इस भू-भाग में रहना एक शून्य में रहने जैसा है। समय की यहाँ या शायद मेरे लिए कोई अहमियत नहीं है। दिनों का हिसाब रखना मुझे नहीं आता। हम औरतों के जीवन में न तो कोई छुट्टी है , न कोई सप्ताहान्त। हमारे जीवन का न तो कोई ध्येय है, न ही कोई प्रयोजन, न ही कोई प्रेरणा हमें सपना दिखाती है। एक सपाट जीवन है जहाँ गति को कोई नहीं जानता। मेरी दाद-सास , साठ, सत्तर अस्सी साल पहले यही जीवन जीती थीं , मेरी सास ने भी यही जीवन जिया होगा, अपनी कोठरी के कुहासे से दालान तक आना और इस दरवाज़े के पर्दे को उठाकर बाहर के संसार को देखना भर उनकी एकमात्र यात्राएँ थीं।

यह भी सच है कि इस घर की औरतें अपने जीते जी यह देहरी फलाँगकर नील नदी के तर तक कभी नहीं गई। मैं आज जीवन के उसी कगार पर खड़ी हूँ जिस पर वह भी एक दिन खडी थीं , अन्तर मात्र इतना है कि मैं गली के

www.ignited.in

बाहर आकर दो-एक बार नील नदी के तट तक जा चुकी हूँ और मेरी ऊँगलियों ने पिरमिड के सख्त खुरदरे पत्थरों को छुआ सभ्यता एवं संस्कृति के लिए प्रसिद्ध मिस्त्र की स्त्रियों की स्थिति अन्य स्त्रियों से बेहतर नहीं है। उन औरतों की वास्तविक स्थिति जानकर लेखिका एक ओर प्रश्न पूछती हैं कि, ये पिरमिड उन्हें क्या प्रेरणा देते हैं? सदियों की कुंठाओं से ग्रस्त स्वतन्त्रता की चाहत रखनेवाली मिस्त्र की अनेक औरतों की प्रतिनिधि वह औरत बताती है कि "एक प्रतीक्षा, इस जन्म के बीत जाने की , इस जन्म के मृत्यु के बाद आनेवाले एक सुखद जीवन की प्रतीक्षा जब मैं किसी और घर या गली में रह सकूँगी , जहाँ पर्दे नहीं होंगे , चेहरे पर नकाब नहीं होगा, दमघोट घुटन नहीं होगी। घर की टूटती-ढहती दीवारें नहीं होगी-खुलापन होगा और होंगी विमान यात्राएँ-जीवन से मुक्तता की ओर ले जाती हुई।ष्

अल्का सिन्हा को अपनी ब्रिटेन यात्रा में मिली तितिक्षा नाम की भारतीय मूल की लड़की जो ब्रिटेन में रहती है। वह लड़की पेशे से फैशन डिज़ाइनर तो है, लेकिन वह अन्तरमन से भारतीय ही है। अपने पेशे के अनुरूप अपने आपको बदलना पडा, लेकिन वह अपनी संस्कृति को छोड़ती नहीं हैं। अल्का सिन्हा को लगती है कि , आधुनिक और दबंग से दिखनेवाली उस तितिक्षा के भीतर कोई ओर तितिक्षा मौजूद हैं। विदेश में अपनी मेधा के बल पर अपनी संस्कृति को अन्दर ही अन्दर संजोकर जीनेवाली तितिक्षा से लेखिका हैरान हो जाती है। तितिक्षा के ज़रिए लेखिका यह जान गई कि, "वहाँ भी किसी अकेली महिला को अपनी अस्मिता बचाए रखने के लिए कठोर मुखौठे की दरकार होती है।ष् अतरू अपनी मेधा को स्थापित करने के लिए स्त्री को खुद लड़ना चाहिए।

यात्रा की सीमा को असीमा बनाती स्त्री यात्रियाँ विभिन्न देशों की स्त्रियों के दुःख-दर्द जानकर उनका साथ देती हैं यहीं नहीं अपने आप में तथा औरों में भी ऊर्जा भर देती हैं। स्वस्थ एवं सुरक्षित यात्रा करने की स्त्री के अधिकार को भी स्त्री यात्रा-साहित्य बुलन्द करता है। देह की वजह से प्रताडित औरतें , स्वतन्त्रता की चाहत रखनेवाली औरतें , विकास की ओर अग्रसर होती औरतें , अपने अधिकार की माँग करती बागी औरतें आदि विभिन्न स्त्री रूपों को स्त्री यात्रा-साहित्य में देखा जा सकता है।

शोध की क्रियाविधि

किसी भी साहित्य विधा के कथ्यगत विश्लेषण के साथ साथ उसका शिल्पगत अध्ययन भी प्रासंगिक है। शिल्प का मुख्य प्रयोजन बाह्य आकृति का निर्माण है। शिल्प-सौन्दर्य ही एक-एक रचना को विशेष बनाता है। साहित्यिक रचना के शिल्प पक्ष में भाषा और शैली का विशिष्ठ स्थान है। रचना के कलेवर बनने में जिन-जिन तत्वों का समावेश हुआ है उन तत्वों को शिल्प के अंतर्गत रखा जाता है। स्त्री यात्रा-साहित्य के शिल्प पक्ष का विश्लेषण करना इसलिए अनिवार्य है,

सहायक डेटा

माध्यमिक डेटा विभिन्न संसाधनों जैसे पुस्तकों , शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम से संचित किया जाता है।

शोध का विश्लेषण

स्त्री यात्रा-साहित्य के शिल्प पक्ष के अन्तर्गत वस्तु , व्यक्ति-चित्र, थल-काल, जिज्ञासा, अनुभूति और कल्पना, उद्देश्य, भाषा और शैली को रखा है। स्त्री यात्रियों ने अपने यात्रानुभवों को सुयोज्य शिल्प में गढ़कर विशिष्ठ रूप प्रदान किया है।

वस्तु

रचना की एक कथावस्तु होती है। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में यात्रा-साहित्य की एक खासियत यह होती है कि, इसमें ऐसी कोई केन्द्रीय वस्तु नहीं होती है , जिसके इर्द-गिर्द कृति की संवेदना घूमती हो। यात्रा-साहित्य की कथावस्तु यात्रा ही है। यात्रा का अनिवार्य शर्त है गतिशीलता, यही गतिशीलता यात्रा-साहित्य की कथावस्तु में भी विद्यमान रहती है। विश्व के विभिन्न भू-भागों को यात्री खुली आँखों से देखता है। यात्रा के समय अपने दृष्टिपथ में आये दृश्य, घटना, प्रसंग आदि जो यात्री मन की संवेदना को छूता है, वही उसकी रचना की विषय-वस्तु बनकर उभरता है। इसलिए किसी भी यात्रा-साहित्य में एक केन्द्रीय भाव का , विचार का, समस्या का रेखांकन नहीं

www.ignited.in

होता है। यात्री जिसप्रकार गतिशील रहता है , उसी प्रकार यात्रा-साहित्य की विषय-वस्तु और संवेदना भी गतिशील रहती हैं।

व्यक्ति-चित्र

यात्रा-साहित्य में व्यक्ति के रूप में या पात्र के रूप में मुख्य रूप से यात्री का ही परिचय मिलता है। पात्र के रूप में यात्री यात्रावृत्त के आद्य से अन्त तक अप्रत्यक्ष रूप में सही विद्यमान रहता है। यात्रा-साहित्य में लेखक की दृष्टि श्व्यक्तिश् विशेष पर उतना केन्द्रित नहीं होता है क्योंकि यात्री की दृष्टि विस्तृत है इसलिए पूरे परिवेश को ही व्यापक परिप्रेक्ष्य में आत्मसात किया जाता है। अतः यात्रा-साहित्य में व्यक्ति-चित्र गौण है , फिर भी भ्रमण के दौरान परिचय में आये कुछ व्यक्ति यात्रा-साहित्य में स्वतरू स्थान प्राप्त कर लेते हैं। अतः यात्री के अलावा ऐसे चरित्रों का समावेश यात्रा-साहित्य में होता है , जिसने यात्रा में यात्री से आत्मीय संबन्ध स्थापित किया हो या प्रेरणादायक लगा हो। इनके चरित्र की आंशिक छवि ही यात्रा-साहित्य में उपलब्ध होती है। स्त्री यात्रा-साहित्य में ऐसा व्यक्ति चित्रण प्राप्त होता है।

थल-काल

हर यात्रा किसी विशेष देश-काल से संबन्धित रहता है। प्रत्येक यात्रावृत्त भी विशिष्ठ देश-काल में बंधा हुआ होता है। स्त्री यात्रा-साहित्य में देश-विदेश की पृष्ठभूमि मौजूद है और यात्रा समय के यात्रा-स्थान के सामाजिक , राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक परिवेशों के अंकन के साथ-साथ अतीत का भी चित्रण मिलता है। स्त्री यात्रा-साहित्य से थल-काल का सहज ही भान हो जाता है। किस समय का , किस देश का चित्रण है इसका सहज ही खुलासा स्त्री यात्रा-साहित्य में मिलता है।

जिज्ञासा

जिज्ञासा यात्रा-साहित्य के रचना शिल्प का एक प्रमुख तत्व है। प्रत्येक देश के इतिहास , राजनीति, संस्कृति, कला कृतियाँ आदि के प्रति जिज्ञासा ही यात्रा की मूल प्रेरणा है तो यह जिज्ञासा यात्रा-साहित्य में भी अंकित होती है। यात्रा करते वक्त बहुत सारे सवाले मन में पैदा होते हैं। एक दृश्य को देखने के पूर्व उसके प्रति जिज्ञासा उमड़ती है।

अनुभूति और कल्पना

यात्रा-साहित्य यथार्थ लेखन है। परन्तु उस यथार्थ वर्णन में कल्पना का सर्वथा अभाव नहीं है। स्त्री यात्रा-साहित्य में लेखिकाएँ वर्तमान से हटकर अतीत और भविष्य में कल्पना के सहारे संचरण करती हुई दिखाई देती हैं। यात्रा-साहित्य में घटनाओं एवं दृश्यों के वर्णन में प्रामाणिकता आवश्यक हैय लेकिन यात्रा-साहित्यकार को देश और काल की परिधि में बाँधा नहीं जा सकता। अतः स्त्री यात्रा-साहित्य में कभी-कभी लेखिकाएँ काल्पनिक जगत में विचरण करती नज़र आती है। वस्तु के यथार्थ वर्णन के साथ-साथ यात्री का कल्पनाशील बन जाना स्वाभाविक है।

प्रत्येक रचना का अपना एक उद्देश्य होता है। महज दृश्यों या घटनाओं का वर्णन करना यात्रा-साहित्य का लक्ष्य नहीं है। भिन्नताओं से भरपूर है यह विश्व। भौगोलिक एवं साँस्कृतिक भिन्नताएँ रखनेवाले अनेक देशों का समुच्चय है यह विश्व। इन विभिन्नता में भी समानताएँ ढूँढता है यात्रा-साहित्य। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से ओतप्रोत प्रत्येक यात्रा साहित्य का एक ओर उद्देश्य यात्रा से प्राप्त आनन्द से दूसरों का परिचय करवाना एवं यात्रा करने की प्रेरणा पैदा करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में स्त्री यात्रा-साहित्य बहुत कामयाब निकलेगा। घर के चार दीवारों में बन्द स्त्रियाँ स्त्री यात्रा-साहित्य से ज़रूर प्रेरणा प्राप्त कर लेंगी। स्त्री यात्रा-साहित्य का उद्देश्य यात्रा के क्षेत्र में स्त्रियों की भागीदारी बढ़ाना एवं स्त्रियों को निडर होकर यात्रा करने की आत्मशक्ति प्रदान करना है। सार्वजनिक स्पेस में स्त्री की सुरक्षा केलिए समाज की तरफ से और कानून की तरफ से बहुत सारी क्रियाएँ अभी करनी हैं।

स्त्री यात्रा-साहित्य का उद्देश्य कहीं भी, कभी भी चलने की स्त्री की आज़ादी को , आनन्द को बुलन्द करना है। यदि स्त्रियाँ ज्यादातर रूप में चलने लगेंगी तो समाज की दृष्टि में भी परिवर्तन आ जायेगा। इसी तथ्य की ओर प्रकाश डाला है अनुराधा बेनीवाल ने “तुम चलोगी तो तुम्हारी बेटी भी चलेगी और मेरी बेटी भी। फिर हम सबकी बेटियाँ

चलेंगी। और जब सब साथ चलेंगी तो सब आज़ाद , बेफिक्र और बेपरवाह ही चलेंगी। दुनिया को हमारे चलने की आदत हो जाएगी। अगर नहीं होगी तो आदत डलवानी पड़ेगी , लेकिन डर कर घर में मत रह जाना। " स्त्री यात्रा-साहित्य इसी उद्देश्य को बढ़ावा दे रहा है।

शैली

अभिव्यक्ति को आकर्षक एवं सौन्दर्यपूर्ण बनाने हेतु जिस विशिष्ट प्रणाली को रचनाकार अपनाता है उसे शैली कहता है। यात्रा-साहित्य वर्णन प्रधान होने के कारण इसकी प्रमुख शैली वर्णनात्मक ही है , इसके साथ-साथ संस्मरणात्मक एवं आत्मकथात्मक शैली भी स्वतः ही यात्रा साहित्य में आ जाती है। इन शैलियों के अलावा स्त्री यात्रा-साहित्य में शैली के तौर पर और भी प्रयोग हुए हैं,

भाषा

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। साहित्यिक विधा को महत्व प्रदान करनेवाली प्रमुख तत्व है भाषा। रचना की अभिव्यक्ति की तीव्रता और मृदुलता उसकी प्रभावात्मकता आदि उसकी भाषा पर निर्भर करता है। यात्रा साहित्य में भाषा का मुख्य द्येय परिस्थिति एवं मनःस्थिति का संप्रेषण होता है। विश्व के विभिन्न प्रान्तों के भूगोल , इतिहास, राजनीति, संस्कृति आदि के चित्रण में तथा अनुभूति की अभिव्यक्ति में अनुकूल भाषा का प्रयोग यात्रा साहित्य में होता है। यात्रा-साहित्य की भाषा चित्रात्मक है।

स्त्री यात्रा-साहित्य की भाषा स्त्री की अपनी भाषा है। स्त्री की आवाज़ को कोमल मानकर उसे दबाया जता है। स्त्री यात्रा-साहित्य में स्त्री भाषा के विभिन्न आयाम उद्घाटित होते हैं। विधा की खासियत को ध्यान में रखते हुए लेखिकाओं ने इसमें चित्रात्मक भाषा का ही ज्यादा प्रयोग किया है।

स्त्री यात्रा-साहित्य में यात्रा स्थान की भाषा के शब्दों का भी इस्तेमाल किया गया है। जैसे नेपाली प्रार्थना का एक बोल है श्सवा कवा हाथ जोड गिर्द छु प्रार्थना। हाम्रो जीवन तिम्रो कोसली। (छोट-छोटे हाथ जोडकर प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरा सारी जीवन अच्छाइयों को समर्पित दो। थोडी देर के लिए श्इंदु ईशांगश् को मेरी मदद करने केलिए भेज दीजिए (इंदु यानी भारतीय इशांग यानी डाक्टर) , जुले-जुले (नमस्कार)श् आदि ।

स्त्री यात्रा-साहित्य में अंग्रेजी शब्दों का भी खूब प्रयोग हुआ है। बीना श्रीवास्तव ने अंग्रेजी शब्दों को अंग्रेजी में ही दिया है। "वहाँ से नीचे आकर फिर हम तीसरी लिफ्ट से ऊपर सबसे ज्वच पर वइेमतअंजवतल तक जाते हैं। वहाँ पूरे ेलेजमउ को नियंत्रित करनेवाली मशीनें लगी हुई हैं। एक और उदाहरण देखिए आजादी मेरा ब्रांड से जिसमें अंग्रेजी भाषा के शब्द बहुतायद देखा जा सकता है क्योंकि उनकी यात्राएँ ज्यादतर अंग्रेजी देशों में हुई है। I cannot wait because I have a date- यहाँ 'date' का सही अर्थ अंग्रेजी में कहने पर ही मालूम पडेगा, इसलिए अनुराधा ने उसी भाषा का इस्तेमाल किया।

अतः स्त्री यात्रा-साहित्य की भाषा मोटे तौर पर बोलचाल की भाषा ही है। इसमें अलंकारों , छंदों, बिंबों आदी की बोझिलता नहीं है।

उपसंहार

वर्तमान समय में स्त्री जीवन के हर मोड पर बदलाव परिलक्षित है। आज वह हर मंच का प्रयोग करके आगे बढ़ रही है। घर की चार दीवारों से मुक्त होकर बिना दीवारों की एक दुनिया यात्रा के द्वारा स्त्री अपने लिए बना रही है। स्त्री की यात्राएँ वास्तव में अन्तर्यात्राएँ ही हैं। ये यात्राएँ स्त्री यात्रियों को आत्मविश्वास प्रदान करती हैं। स्त्री की यात्राएँ अपने आपको खोजने केलिए की गयी यात्राएँ हैं।यात्रा-साहित्य में चित्रित व्यक्ति चित्रों से मनुष्य-मनुष्य का परिचय मिलता है। स्त्री यात्रियों ने रचनाक्रम में वस्तुस्थितियों के चित्रण में यथार्थता बरकरार रखा है , साथ ही साथ कल्पना के सहारे अतीत और भविष्य की भी यात्रा की है। लोक कल्याण की भावना से संपूर्त स्त्री यात्रा-साहित्य भाषा और शैली की दृष्टि से भी अद्वितीय है। भाषा इसकी चित्रात्मक एवं वैविध्यपूर्ण है। डायरी , संस्मरण, आत्मकथा आदि विधाएँ यात्रा-साहित्य में आकर शैली बनी हुई हैं। शैली के तौर पर स्त्री यात्रियों ने नये-नये प्रयोग किए हैं।

www.ignited.in

संदर्भ सूची

1. गरिमा श्रीवास्तव (2016) - बनमाली गो तुमि पर जनमे होइयो राधा, पृ. 204
2. गरिमा श्रीवास्तव (2014) - बनमाली गो तुमि पर जनमे होइयो राधा, पृ. 206 107
3. नासिरा शर्मा (2011) - जहाँ फव्वारे लहू रोते है , पृ. 196
4. नासिरा शर्मा (2013) - जहाँ फव्वारे लहू रोते है , पृ. 99
5. कुसुम खेमानी (2016) कहानियाँ सुनाती यात्राएँ राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली , प्र. सं. 2012 पृ. 55
6. सरिता खुराना (2019) किस्सा हर सफर का स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.सं. 2013 पृ. 88
7. डॉ. गोविन्द चातक (2018) - आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, पृ. 78
8. डॉ. पाण्डेय शशिभूषण (2017) शैली और शैली विश्लेषण सीताशू वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्र. सं. 2017 पृ.55
9. (2018) भाषा, साहित्य और देश हज़ारीप्रसाद द्विवेदी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली , प्र. सं.2018 पृ. 70
10. देवीशंकर द्विवेदी (2015) भाषा और भाषिकी राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, सं. 2015 पृ. 80
11. माजद असद (2011) गद्य की नई विधाओं का विकस ग्रंथ अकादमी प्रकाशननई दिलली , प्र. सं. 2011 पृ. 110.

Corresponding Author

Kusum Lata*

Research Scholar, Sunrise University